CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री पाठात्मक कोटि चण्डी यज्ञात्मक साधना पीठ की प्रमुख पत्रिका

भवानी रत्न

दक्षिण भारत से प्रकाशित होने वाला एकमात्र धार्मिक मासिक

श्री यंत्र

वर्ष : २ दिसम्बर १९८१ अंक : ८

एक प्रति का मूल्य : २-०० रुपये

वार्षिक शुल्क : २१-०० रुपये

कार्यालय :

मासिक भवानी-रत्न

२२-६-७३९, पंजेशाह,
देवकी गली, हैदराबाद (आं.प्र.)

फोन : ४१९३७ पी.पी.

प्रकाशक, सम्पादक :- महर्षि वी. एम. दाधीच (महर्षि)

सह सम्पादक :- भावना शुक्ला

प्रबन्धक :- श्री पाठात्मक कोटि चण्डी महायज्ञ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Grams : MANIKSONS

Phones : { Office : 43250
Br. : 51928
Resi. : 41441

CHABILDAS MANIKDAS & BROS

4-1-585, Troop Bazar, HYDERABAD-500 001

Wholesale Stockists for :

M/s. Asbestos Cement Ltd., Bombay
M/s. Hindustan Sanitaryware & Industries Ltd.
M/s. Somani Pilkingtons Ltd. (Glazed Tiles)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः ।
इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे ॥११॥
सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्ट चेतनः ।
मत्पूर्वं पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हितत् ॥१२॥
मद भृत्यैरसद्वृत्तैधर्मतः पाल्यते न वा ।
न जाने स प्रधानो मे शूर हस्ती सदामद ॥१३॥

मुनि द्वारा सत्कृत होकर फिर वहाँ बिता अपना कुछ काल ।
घूम विपिन में इधर-उधर कुछ काटा चिन्ता का कुछ जाल ॥
ममता कृष्ट चित्त ले फिर वे इस विध करने लगे विचार ।
मम पूर्वज–पालित पुर देखो, मुझ बिन आज बना निरधार ॥
रक्षा धर्म विधि से उसकी करते होंगे क्या मम भृत्य ।
मरवर्षा औ हाथी मेरा होगा जाने कहाँ सुकृत्य ॥

'प्रकाश'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

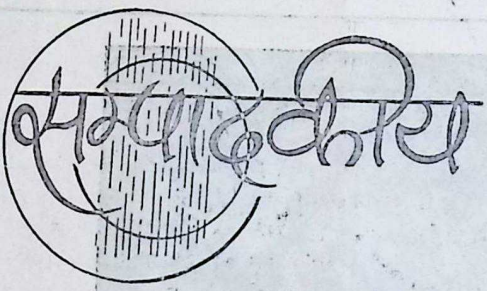

आंग्ल वर्ष कल्पनानुसार यह वर्ष का अन्तिम मास है। हमने इस अवधि में क्या खोया क्या पाया इसके परिगणन् का यह समय है। हम जब विगत वर्ष पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि हमारे विद्वान लेखकों, प्रेमी अनुग्राहकों का सहयोग तो हमें पर्याप्त परिमाण में प्राप्त हुआ है परन्तु मुद्रकों के प्रेम पूर्ण सहयोग से हम वंचित ही रहे है। देय राशि का अग्रिम भुगतान कर देने पर भी समय पर कम्पोजिटरों और मुद्रकों ने हमें बार-बार प्रेस के चक्कर लगाने पर विवश किया है और प्रायः सामग्री इतने विलम्ब से मुद्रित करके देने का कष्ट किया है जिससे कई बार तो हम ऐसी स्थिति में जा पहुँचे हैं कि केवल रोना ही शेष रह गया। इसी प्रवृत्ति के कारण विगत दो मास से हम अंक यथा समय अपने कृपालु पाठकों के हाथ देने में असमर्थ रहे हैं। आशा हैं सहृदय पाठक वस्तु स्थिति को जानकर हमें क्षमा करेंगे।

इसके अतिरिक्त विगत दो मास से भवानीरत्न के संरक्षक तथा श्री पाठात्मक कोटि चण्डी के प्रवर्त्तक ब्रह्मर्षि, परमभक्त श्री उपेन्द्र शुक्ल महाराज गम्भीर रूप से रुग्ण रहे। उनकी परिचर्या में सारा रत्न परिवार संलग्न रहा अतः यह भी अंक के विलम्ब से प्रकाशित होने का एक कारण रहा।

२७ नवम्बर १९८१ से भाग्यनगर भू परम भागवत श्री रामचन्द्र जी डोंगरे महाराज के प्रवचनों से लाभान्वित हुई। अष्टोत्तर शत श्रीमद्भागवत के पारायण उपक्रम में जहाँ भक्ति की धारा प्रवाहित हुई। वहाँ यह कटु अनुभूति भी हुई कि जिन ब्राह्मणों को फण्ड जमा करने का माध्यम बनाया गया था उन्हीं की पदे-पदे अवहेलना की गई। न उनके फलाहार की समुचित व्यवस्था की गई न भोजन की कौन व्यक्ति किस स्तर का है। किसके साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए इसके प्रति भी उदासीनता ही परिलक्षित की गई।

भगवान् ने अपने श्री मुख से कहा है।

"अविद्वोवा सविद्वोवा ब्राह्मणा मामकी तनू।" तथा

विप्र प्रसादात् धरणी धरोऽहं विप्र प्रसात कमलावरोऽहम्।

..... विप्र प्रसादात् मम् राम नाम ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके साथ ही भक्ति के क्षेत्र में माताओं का जो अनिर्वचनीय उत्साह देखने को मिला उसका अपना ही महत्व है। भारत आज पश्चिम के प्रभाव में आकर भले ही अपने स्वरूप को विस्मृत करता जा रहा हो परन्तु जब तक भक्तिमति आस्तिक माताएँ भू पर विद्यमान हैं तब तक भारतीय धर्म, सभ्यता और संस्कृति की पताका इसी प्रकार फहराती रहेगी।

आज की अनिवार्य आवश्यकता है सनातन धर्म की रक्षा और यह तभी संभव है जब आर्ष विद्या की शिक्षा हमारे बालकों को प्राप्त हो। मात्र संस्कृत विद्यालय खोलने की नहीं मिशनरी रूप में इस दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है जिससे धर्म, सभ्यता, संस्कृति आदि की रक्षा हो। हमें इस बात की शिक्षा संस्कार रूप में प्राप्त हो कि हमारा आचार क्या है? व्यवहार कैसा हो और विश्व को कुछ सिखाने के क्षेत्र में हमारी स्थिति क्या हो? आज हम भगवान् मनु के इस दिव्य सन्देश को भूल गये हैं।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

और परिणाम यह है कि आज हम शिक्षा प्राप्ति हेतु विदेशों की ओर उन्मुख हो रहे हैं। विदेशों ने हमसे बहुत कुछ लिया आत्मसात् किया और आज वे चारित्रिक पर्वत के शिखर पर आसीन हैं और हम? हमारी स्थिति तो यह है कि प्रशंसा हमारी हो, यश हमें मिले, धन-सुख सब हमारे-चरणों में लोटे परन्तु करना हमें कुछ भी न पड़े। हम भगवान् श्री कृष्ण के इस कथन को विस्मृत कर।

"नहि कश्चित् क्षणमपि जातुतिष्ठत्य कर्मकृत्"

परिश्रम से विमुख होते जा रहे हैं। परिणामतः अपने सहज संस्कार कर्म और धर्म से दूर होकर पतन की ओर उन्मुख हो रहे हैं जो धर्म हमारा रक्षक होना चाहिए था वही हमारा सहारक हो रहा है और हो भी क्यों नहीं क्योंकि–

"धर्म एवं हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः"

हमने धर्म को मात्र एक खिलौना बना लिया है और खिलौना कब हित साधक होता है?

अस्तु, हमारा लक्ष्य अब धर्म की सही दिशा उन्मुख होना चाहिए तभी हम जीवन में उत्कर्ष प्राप्त कर सकेंगे।

अन्त में हम अपने कृपालु सहयोगियों से पुनः विलम्ब के लिए क्षमा चाहते हुए निवेदन करते हैं कि हम प्रकाशन विषय में स्वतन्त्र होने के लिए अपने स्वतन्त्र मुद्रणालय की स्थापना हेतु प्रयत्नशील हैं और इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अपने सभी प्रेमियों के सहयोग और भगवती परम्बा के आशीर्वाद की कामना करते हैं।

आपका ही

ब्रह्मर्षि बी. एस. दाधीच
सम्पादक 'भवानी रत्न मासिक'

हैदराबाद
दिसम्बर १९८१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

With best compliments from :

OM TRADING COMPANY

Stockists : "EVEREST" Asbestos Cement Products
Distributors : Hindustan Sanitary Wares
Dealers in : C. I. & G. I. Pipes & Fittings, Glazed Tiles, Water Meters, Fire Bricks, Highclass C. P. Bathroom Fittings etc.

5-2-157, RASHTRAPATHI ROAD,
SECUNDERABAD-500 003

शुभकामनाओं सहित,

फोन : दुकान : ४१९२८
घर : ४१९३७

एम. पूनमचन्द जौहरी

मोतियों के व्यापारी

चारकमान, हैदराबाद-५००००२ (आं. प्र.)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गीता का समन्वयवाद

डॉ. भीष्मदत्त शर्मा,
मंत्री, धर्म संघ, मेरठ

हिन्दू शास्त्रों में मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी मोक्षदा एकादशी के नाम से विख्यात है। इसी मोक्षदा एकादशी को जन-कल्याण के लिये श्रीमद्-भगवद्गीता का आविर्भाव हुआ। अतः मुक्ति प्रदान करने वाले ग्रन्थों में गीता का प्रमुख स्थान है। संसार में अध्यात्म विषय ग्रन्थ गीता के समान और कोई नहीं है। गीता पर जितनी टीकाएँ, भाष्य और अनुवाद विविध भाषाओं एवं विद्वानों के मिलते हैं, उतने किसी अन्य धार्मिक ग्रन्थ पर नहीं मिलते हैं। पद्मपुराण में वर्णित गीता की महिमा को देखने से पता चलता है कि इस ग्रन्थरत्न के सदृश महिमा दूसरे किसी ग्रन्थ की नहीं है। महाभारत में स्वयं भगवान् वेदव्यास जी ने गीता के महत्त्व के संबंध में कहा है—"गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रसंग्रहैः। या स्वयं पद्मनाभस्य मुख्य पद्मादविनिःसृता॥ (भीष्मपर्व ४३।१) अन्य शास्त्रों के संग्रह की क्या आवश्यकता है? गीता का ही अच्छी प्रकार से श्रवण, मनन और धारण करना चाहिये क्योंकि इसका आविर्भाव साक्षात् पद्मनाभ भगवान् श्रीकृष्ण के मुखकमल से हुआ है। गीता सारे उपनिषदों का सार है। शास्त्रों में कहा गया है—सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः। पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।" सारी उपनिषदें गाय हैं, गोपालनन्दन श्रीकृष्णचन्द्र परमात्मा उनको दुहनेवाले (ग्वाला) हैं, अर्जुन बछडा है और भक्तजन उनसे निकले हुए महान् गीतामृतरूपी दूध का पान करने वाले हैं। जैसे मनुजी सर्ववेदमय हैं, गंगा जी सर्वतीर्थमयी हैं, श्रीहरि सर्वदेवमय हैं, इसी प्रकार गीता सर्वशास्त्रमयी है—"सर्वशास्त्रमयी गीता सर्वदेवमयोहरिः। सर्वतीर्थमयी गंगा सर्ववेदमयो मनुः॥ (भीष्मपर्व ४३।२) गीता के श्रवण मनन, धारण, प्रवचन तथा प्रचार के महत्व का वर्णन गीता के अन्त में भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज ने बडे रोचक ढंग से किया है। इस प्रकार के अनूठे महत्त्ववाली गीता की पावन जयन्ती इस वर्ष सात दिसम्बर को समस्त देश में उल्लासपूर्वक मनायी जा रही है। इस शुभ अवसर पर इस स्वल्प कलेवर ग्रन्थरत्न की अद्भुत प्रसिद्धि के आधारभूत समन्वयवाद पर विचार करने से हम आधुनिक युग के अशान्त मानव को शान्ति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

गीता की महिमा उसके समन्वयवाद में है। भारतीय तत्त्वदर्शन में कर्म-भक्ति-ज्ञान की त्रिवेणी का सुन्दर दर्शन पदे-पदे होता है। गीता बड़े सहज भाव से इन तीनों का समन्वय कर सर्वाङ्गीण जीवन दर्शन को प्रस्तुत करने में सक्षम सिद्ध हुई है। कर्म, भक्ति एवं ज्ञान का मानव जीवन में समान महत्त्व है। जिस प्रकार पूर्ण पुरुष-भगवान् की वाणी वेद में कर्म, उपासना एवं ज्ञान तीनों सम्बद्ध हैं। वेद के ब्राह्मण भाग में कर्म, मन्त्र भाग में उपासना तथा उपनिषद् भाग में ज्ञान है, वैसे ही पूर्ण पुरुष भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र की गीता में भी तीनों सम्बद्ध हैं। अत. गीता का जीवन दर्शन भी पूर्ण ही है, अपूर्ण नहीं। "कर्मण्येवाधिकारस्ते" (२।४७) आदि स्थलों में कर्म, "सर्वधर्मान्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज" (१८।१६) "पत्रं पुष्पं फलं तोयं (९।२६) आदि में उपासना, "सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते" (४।३३) आदि में ज्ञान और "मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्ग-वर्जितः" (११।५५) इत्यादि में कर्म, उपासना एवं ज्ञान तीनो का समुच्चय है।

वेद की भांति गीता में कर्मप्रवृत्ति और ज्ञान दोनों हैं। उपासना का कर्म-ज्ञान दोनों से सम्बद्ध है। अतः गीता में कर्म-ज्ञान दोनों हैं। यदि उसमें कर्म होता; ज्ञान न होता, ज्ञान होता, कर्म न होता; तो 'श्रीमद्भगवद्गीता' एकदेशीय पुस्तक हो जाता, अपूर्ण रहती; अतः सर्वप्रिय भी नहीं बन सकती थी। समन्वित जीवन दर्शन के कारण ही यह सब प्रकार के व्यक्तियों के लिये उपयोगी होने से लोक-प्रिय बन गयी है। इस प्रकार कर्म, उपासना एवं ज्ञान के सामंजस्य द्वारा सारे संसार का कल्याण-साधन, साथ ही साथ युद्ध कराकर धर्म की विजय कराना ही गीता का उद्देश्य है।

गीता में उपनिषदों का सारभूत तत्त्व संग्रहीत है। इसीलिये इसके प्रत्येक अध्याय की पुष्पिकाओं में 'श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु' ऐसा पाठ मिलता है। उपनिषदों में कर्म और ज्ञान दोनों का वर्णन मिलता है। उपनिषदों में वर्णित जनक, अजातशत्रु आदि कर्मयोगी होते हुए भी ब्रह्मज्ञानी थे। वस्तुतः कर्म को निष्कामता से करने का उपदेश इसीलिये दिया गया है कि व्यक्ति कर्म को अकर्म बनाकर ब्रह्मज्ञानी हो जाये। इससे स्पष्ट है कि कर्म आदिम सोपान होने से व्यावहारिक है, क्योंकि वही व्यक्ति के मूल-आवरण-विक्षेप आदि दोषों के हटाने में सहायता कर चित्तशुद्धि करता है। अर्थात् कर्म से मल नाश, उपासना से विक्षेप का नाश तथा ज्ञान से आवरण का नाश होकर ब्रह्मत्व की प्राप्ति होती है।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि गीता में कर्म भी है, उपासना भी है और ज्ञान भी है। प्रसिद्ध विद्वान् परमपूज्य मधुसूदन सरस्वती जी महाराज ने पहले छः अध्याय कर्मपरक, दूसरे छः अध्याय उपासनापरक तथा अन्तिम छः अध्याय ज्ञानपरक माने हैं। अतः गीता के मतानुसार व्यक्ति शास्त्रोक्त कार्य करता हुआ भगवद्भक्ति को प्राप्त कर अन्त में ब्रह्मज्ञानी हो जाता है। इन तीनों का यथावत् पालन करने से मनुष्य को परमशान्ति मिल जाती है।

---- :०: ----

बूझत स्याम कौन तू गोरी

बूझत स्याम कौन तू गोरी।
कहाँ रहति, काकी है बेटी, देखी नहीं कहूँ ब्रज-खोरी॥
काहे कौं हम ब्रज तन आवति, खेलति रहहिं आपनी पौरी।
सुनत रहति स्रवननि नंद-ढोटा, करत फिरत माखन-दधि-चोरी॥
तुम्हरौ कहा चोरि हम लैहैं, खेलन चलौ संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक-सिरोमनि, बातनि भुरइ राधिका भोरी॥

(सूरसागर)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैदिक धर्म में वर्ण व्यवस्था

वैदिक धर्म के प्रमुख तत्त्व और सिद्धान्त निम्न प्रकार है। १) ईश्वर, २) जीव, ३) जगत, ४) वैषम्य, ५) धर्माधर्म, ६) सुख दुख, ७) पूर्व जन्म, ८) पुनर्जन्म, ९) परलोक, १०) वेद प्रामाण्य, ११) चतुर्विध पुरुषार्थ, १२) वर्णाश्रम व्यवस्था, १३) जाति भेद १४) संस्कार, १५) विवाह संस्था, १६) कुटुंब संस्था, १७) कुल संस्था, १८) अहिंसादि सामान्य धर्म, १९) विशेष धर्म, २०) त्योहार और उत्सव, २१) मूर्ति पूजा, २२) पृश्या-स्पृश्यविवेक, २३) चित्तशुद्धि, २४) श्रद्धा, २५) मोक्ष।

१) एक ही परमात्मा सत्य तत्व है। २) वही परमात्मा अपने अनिर्वचनीय त्रिगुणात्मक माया शक्ति से अखिल विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और लय करता है। ३) वेद यह उसके वचन हैं और वे अपौरुषेय होने से निर्दोष होकर सतः प्रमाण है। ४) जीव यह वास्तव में सच्चिदानंद परब्रह्म स्वरूप है। पर उसे अपने स्वरूप का विस्मरण होकर जीव भाव को प्राप्त होता है तथा कर्मानुसार ८४ लक्ष योनी भटकता है। स्थूल शरीर के साथ उसका विनाश नहीं होता, वह नित्य है। उसे ही पूर्व जन्म पुनर्जन्म, परलोक है। कर्म-उपासना-ज्ञान इसके अनुष्ठान से उसे अपने मूल स्वरूप की प्राप्ति होती है। ५) सगुणोपासना यह ईश्वर प्राप्ति का साधन है। वर्णाश्रम व्यवस्था और जातिभेद यह वैदिक धर्म का मूल है। ६) स्वधर्मानुष्ठान से ही त्रिविध सुखों का लाभ होता है। ७) अहिंसा, सत्य, अशौच, शौच, दान, दया, परोपकार, ब्रह्मचर्य इत्यादि मनुष्यों के सामान्य धर्म हैं। ८) पदार्थों के सिद्ध करने के लिए प्रत्यक्ष, अनुमान तथा शब्दादि प्रमाणों को मानना पडता है, उन सब प्रमाणों में वेद यह स्वतः प्रमाण है। ९) निष्काम कर्मानुष्ठान से ईश्वर प्राप्ति और चित्तशुद्धी होने पर इस जन्म में या अनेक जन्मों के पश्चात साधन चतुष्टय संपन्न जीव होने पर उसे सद्गुरु का लाभ होता है। सद्गुरु के महावाक्य का उपदेश मिलने पर तथा श्रवण मनन निदिध्यासन इनका परिपाक होने पर अपरोक्ष साक्षात्कार होता है और उसके पश्चात उसके संचित कर्म का नाश होता है और ज्ञानोत्तर क्रियमाण कर्म से संबंध नहीं रहता। तथा प्रारब्ध कर्म भोगकर समाप्त होने के पश्चात जीव परब्रह्म स्वरूप होने पर वह पुनः जन्म मरण के चक्कर में नहीं आता। इसे ही मोक्ष ऐसी संज्ञा है। यही मनुष्य का अंतिम ध्येय है।

आज पूरी दुनिया में जितने भी धर्म हैं उनमें सबसे श्रेष्ठ वैदिक धर्म है। यह सबसे विलक्षण भी है। क्योंकि इसमें "धर्मार्थकाममोक्ष" यह चार पुरुषार्थ, ब्रह्मचर्यादी आश्रम तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र यह चार वर्ण और अनुलोम प्रतिलोम यह जाति और कुल संस्था यह वैदिक धर्म के वैशिष्ट्य है। इसीलिये इसे 'सनातन' यह नाम शोभा देता है। यह दुनिया के प्रारंभ से अन्त तक कायम टिकने वाला है। उसमें कहे गये पूरे सिद्धान्त अपरिवर्तनीय है। सृष्टी उत्पन्न होने के पहले यह धर्म ईश्वर स्वरूप में अव्यक्त रूप से रहता है और सृष्टी के उत्पन्न होने पर परमेश्वर, जगत्कल्याण के लिये प्रकाशित करता है।

स्वातंत्र्य के पहले १००–१२५ वर्ष तक भारत में अंग्रेजी हुकूमत थी। इसी कारण लोगों में धर्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रद्धा नष्ट हुई। इस धर्मों के सिद्धान्तों को ऐसे शिक्षित लोग विकृत दृष्टि से देखने लगे इस कारण वैदिक धर्म के तत्व उन्हें सदोष दिखने लगे और उनमें परिवर्तन लाये बिना समाज और राष्ट्र की उन्नति होना असम्भव है ऐसी उनकी भ्रामक कल्पना हुई है। उनमें वर्णव्यवस्था और जातिभेद, विधवा विवाह यह आक्षेपार्ह है। उनका कहना है कि देश काल परिस्थितीनुरूप उनमें परिवर्तन करना आवश्यक है।

पिछले ५०-६० वर्ष से वर्ण श्रेष्ठ जो ब्राह्मण यही स्वैराचार करने के लिये प्रवृत्त हुवा है। ब्राह्मण जातिय विवाहित स्त्री पुरुष से जो उत्पन्न हुवा वही ब्राह्मण यह सृष्टी के आरम्भ से ही निश्चित हुवा था। जिस प्रकार एक शरीर के अवयव अलग अलग होने पर भी एक दूसरे के पोषक होते हैं वैसे भारतवर्ष यह एक शरीर है और वर्ण जाति उसके अंगोपांग है। इस धर्म में परिवर्तन करने का अधिकार शास्त्र के सिवा किसी को भी नहीं है। वर्ण व्यवस्था जन्मसिद्ध है। एक जन्म में वह कभी भी बदल नहीं सकती। इससे ही समाज में और भारत में ऐक्य निर्माण होकर सही उन्नति होती है। आज मनुष्य, अर्थ, काम यह दो पुरुषार्थ के ही पीछे पडा है। धर्म और मोक्ष भूल गया है। जो अर्थ काम के पीछे पडता है वह कर्त्तव्य पराङ्मुख हो जाता है। आज अगर डॉक्टरों या इंजीनियरों का वेतन रु. ५०० और दूसरे व्यवसायों में काम करने वालों का वेतन अगर रु. १००० कर दिया गया तो कोई भी डॉक्टर या इंजीनियर नहीं होगा। यह बात वर्ण व्यवस्था में नहीं है। उसमें ऐसा माना जाता है कि अपने जन्मानुसार जो अपना वर्ण या जात है वही व्यवसाय करना अपना आद्य कर्तव्य है। उससे अनुवंशिक गुणों का भी विकास होता है और वंश परम्परा भी कायम रहती है। आज भी हमें चार वर्णों की आवश्यकता है। पर वह जन्म पर नहीं किन्तु कर्म पर। पर कर्म हमेशा बदलने से उसमें हम प्राविण्य नहीं ला सकते हैं। आज इसका हम अनभव करते हैं।

वंश परम्परागत जो वैद्य होते थे, रोगी को देखकर ही रोग का निदान करते थे। पर आज डॉक्टरों का समूह मिलकर भी किसी एक रोग का उचित निदान नहीं कर पाते हैं। आज की बेरोजगारी का भी मुख्य कारण यही है। अगर वर्ण व्यवस्थानुसार हर एक अपना व्यवसाय करेंगे तो बेकारी का प्रश्न ही नहीं उठता। ऐसा न होने से जिस व्यवसाय में अधिक लाभ है ऐसे ही व्यवसाय के पीछे सब पड रहे हैं और इसीलिये बेरोजगारी प्रश्न आज बडा गम्भीर हो गया है। उसी प्रकार विधवा विवाह का प्रचार भी आज बहुत जोरों से हो रहा है। हमारे भारतीय संस्कृति के सामने सावित्री जैसे महान पतिव्रता का आदर्श है जिसने अपने भावी पति की आयु १ ही वर्ष है यह मालूम होने पर भी उसी से विवाह किया। स्त्री जब अपने पति के साथ अग्नि की ७ परिक्रमा करती है तो यह कहकर कि मैं उसका साथ इसी जन्म में ही क्या अगले जन्म में भी दूंगी। ऐसी परिस्थिति में जब कभी दैववश किसी के पति की मृत्यु होती है तो क्या वह इसी जन्म में ही साथ देने से मुंह मोड लें! वस्तुतः माता पिता का यह कर्तव्य है कि जहाँ तक हो सके योग्य वर के साथ ही अपने बेटी का विवाह करें। विवाह विधि को कन्यादान विधि कहा जाता है जिसमें वधु के पिता अपनी पुत्री का दान करता है। हमारे धर्म शास्त्र के अनुसार जब किसी वस्तु का दान किया जाता है तो दक्षणा के सिवाय दान विधि पूर्ण नहीं होती। तो वर दक्षणा यह अपरिहार्य है। किन्तु वर दक्षणा वधु पिता के इच्छानुरूप तथा उसके परिस्थितीनुरूप होनी चाहिये। नियम बदले जाते हैं सिद्धान्त नहीं। पानी का सिद्धान्त है कि उसके विघटन करने पर हैड्रोजन के दो भाग और ऑक्सीजन (प्राण वायु) का १ भाग अलग होता है। इसमें कालमान या परिस्थितीनुसार बदल होता नहीं। उसी प्रकार धर्म सिद्धान्त होते हैं। उनमें शिथिलता या परिवर्तन करना याने स्वैराचार करना है। समझो आज धर्म ने विधवा विवाह को मान्यता दी जो एक असंभव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बात है। फिर भी कल यह मांग होगी कि एक स्त्री को एक पति से तृप्ति नहीं होती है, अतः एक समय दो पति करने की अनुमति होनी चाहिये। क्योंकि महाभारत में द्रौपदी के भी ५ पति थे। आज यह भी कुछ स्त्रियों से सुना जाता है कि सीताजी अपने राम के वाम अंग पर बैठती थी तो हम क्यों न बैठे ? पर यह कहने वाले यह भूल जाते हैं कि सीताजी ने अग्नि दिव्य भी कर दिखलाया था। इसका तात्पर्य यह है कि अगर कोई स्त्री बाल अवस्था में विधवा हो जाए तो वह किसी पुरुष के आश्रित होकर रहे, परन्तु उसे विवाह का नाम देकर विवाह संस्था की चेष्टा नहीं करनी चाहिये।

वैज्ञानिक दृष्टि से वर्ण व्यवस्था का विचार :-

'वर्ण व्यवस्था' इस शब्द का अर्थ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र यह जो चार वर्ण इसका अस्तित्व रखने वाली जो शक्ति, उस शक्ति को 'व्यवस्था' यह संज्ञा है। मनुष्य प्राणियों में जो जातिभेद उसे ही वर्ण व्यवस्था यह नाम है, उसी का विचार हमें प्रमुता से करना है। यह जातिभेद किसी जीव ने नहीं किया। ईश्वर ने ही मानव समाज के कल्याण के लिये इसे बनाया है जो वैज्ञानिक दृष्टि से भी योग्य है। वैदिक समाज में जो जातिभेद था वह मनुष्यकृत नहीं तो ईश्वर ने निश्चित किये हुए उन उन जीवों के पूर्व जन्म के शुभाशुभ कर्मों का वह एक जन्म सिद्ध कर्मविपाक है। उसका परिवर्तन एक जन्म में कोई भी नहीं कर सकता। जातिभेद वैदिक धर्म का प्राण है। कुछ लोगों का यह आक्षेप है कि जब चातुर्वर्ण्य ईश्वर कृत है तो उनमें ऊंच नीच भाव क्यों ? कारण सब मनुष्य के पांचभौतिक शरीर समान है। इस कारण यह भेद मनुष्य कृत है। स्वार्थी ब्राह्मणों ने अपना वर्चस्व कायम रखने के लिये यह जातिभेद निर्माण किया है। उसका निर्मूलन किये बिना वैदिक समाज की संघटना नहीं होगी।

इसे यह उत्तर है कि दुनिया में जड़चेतन पदार्थों में जो परस्पर भेद है वह परमेश्वर ने ही सृष्टि की उत्पत्ति के समय किया है। पंचमहा भूतों से जो जड़ चेतन भौतिक सृष्टि हुई उनमें भी भेद है। पाषाण, मृतिका, कष्ठ, रौप्य, सुवर्णादि धातु इनमें स्वाभाविक भेद है। वैसे चतुर्विध प्राणियों में चेतन सृष्टि निर्माण हुई। उद्भिज, स्वेदज, अंडज, जरायुज इनमें भी भेद है। यह तो स्वार्थी ब्राह्मणों ने नहीं किया। मनुष्य में भी स्त्री पुरुष भेद है। भेद ही सृष्टि का मुख्य सिद्धांत है। अगर सब मनुष्यों का रूप समान होता तो कितना अनर्थ हो जाता। भेद के बिना जग के व्यवहार ही नहीं हो सकते। मनुष्य के समान देवी देवताओं में भी १० जातियां कही गई है। इस पर कुछ लोग कहते हैं कि इतर प्राणियों में आकृति भेद है। जैसे पशु, पक्षी। पर मनुष्य में आकृति भेद नहीं है। उसे यह उत्तर है कि भेद दो प्रकार का होता है। एक बाह्य भेद जो व्यक्ति को देखते ही साधारणतः मालूम होता है और दूसरा अंतर भेद जो सभी को मालूम नहीं होता। जैसे हीरा, मोती इनमें जो भेद होता है वह रत्न पारखी ही पहचान सकता है, सामान्य मनुष्य नहीं। किसी बड़े हीरे की कीमत कम और छोटे हीरे की अधिक हो सकती है। मृतिका में भी भेद होते है जो तज्ञ ही जानते है। आम फल सभी एक ही है परन्तु उनमें भी भिन्न भिन्न प्रकार और रूचि होती है। वैसे मनुष्यों में भी भेद है जो सामान्य को मालूम नहीं होता। अधिकारी पुरुष ही वह जान सकता है। कर्ण सूत पुत्र होते हुए भी ब्रह्मास्त्र विद्या सीखने के लिये परशुराम के पास पहुंचा। परशुराम ने पूछा उसकी जाति क्या है। तो कर्ण ने अपनी जाति ब्राह्मण बताई। परशुराम ने उसे विद्या सिखाई। एक समय परशुराम कर्ण के अंक पर मस्तक रखकर सो गये थे। उसी समय एककीटक कर्ण के अंक को चीरकर अंदर घुसा। कर्ण को अत्यन्त वेदना होने लगी पर गुरू निद्रा के भंग होने के भय से वह चुपचाप बैठा रहा। उस कीटक ने उसके अंक को फोडने से रक्त श्राव होकर उसका स्पर्श परशुराम के देह को हुआ, तो वे जाग गये। देखते हैं तो खून जमा हुआ था। उस कीट को उन्होंने निकाल कर कर्ण को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूछा कि उसकी सही जाति कौन सी है। तू ब्राह्मण तो निश्चित नहीं है। उस पर कर्ण ने सही बताया। उस समय कर्ण को परशुराम ने श्राप दिया कि उसके झूठ बोलने के कारण वह विद्या उसे योग्य समय पर काम नहीं आयेगी। परशुराम तो सामान्य व्यक्ति नहीं थे। हालांकि उसको श्राप देने के अतिरिक्त उन्हें उसका गौरव करना चाहिये था। वैसे ही वाल्मीकि का उदाहरण भी है। नारद मुनी ने पहचाना कि यह भील न होकर ब्राह्मण है। यह जानकर उसे उपदेश दिया और वह महर्षि बना। तात्पर्य पश्वादिकों में जैसा जातिभेद है वैसा मनुष्यों में भी है। और वह केवल जन्म सिद्ध न होकर ईश्वर कृत है। व्यवहारिक दृष्टि से भी वह होना अत्यन्त आवश्यक है। कुछ लोग कहते हैं कि जाति परिवर्तन एक जन्म में क्यों नहीं होता? अगर एक ब्राह्मण अपने आचार नहीं करता तो उसे शूद्र क्यों नहीं कहना चाहिये। और अगर एक शूद्र होकर ब्राह्मण के आचार करने लगा तो उसे ब्राह्मण क्यों नहीं कहना? इसका उत्तर यह है कि जाति इसका अर्थ जन्म ऐसा है। बन्सी गेहूं अगर उसे कीड़ लग गई तो भी उसे गेहूं ही कहा जायेगा। जवार नहीं। घोडे और गधे से खेचर उत्पन्न होता है तो उसे न गधा कहा जा सकता है, न घोडा। उसकी जाति खेचर ही हुई। हाँ उस ब्राह्मण को हम शूद्र सम कह सकते है। शूद्र नहीं। प्रत्येक जीव के साथ उसका शुभाशुभ कर्म होता है। उस कर्म के तीन प्रकार होते है। संचित, प्रारब्ध और क्रिय माण। इस कर्म के अनुसार ईश्वर जाति उत्पन्न करता है जिसे हम एक जन्म में बदल नहीं सकते। व्यवहार में भी परस्परों का कर्म बदलने का अधिकार प्रत्यक्ष सरकार को नहीं है। किसी व्यक्ति ने किसी की हत्या की तो उसकी सजा उसे ही भोगनी पडती है, उसके परिवार को या मित्रों को नहीं। अथवा किसी विद्यार्थी को उच्च शिक्षण के पश्चात प्रमाण पत्र मिला तो वह उसे ही दिया जाता है और उसमें परिवर्तन करने का अधिकार कुलपति को भी नहीं होता। थर्ड क्लास का टिकट निकालने पर हम सेकण्ड क्लास में जाकर नहीं बैठ सकते। व्याघ्र मरने पर भी उसकी खाल को व्याघ्र चर्म ही कहा जाता है, मृग चर्म नहीं। इतना ही नहीं तो मरने के पश्चात भी उस जाति के गुण धर्म उस चर्म में रहते है। इसका अनुभव ऐसा कि बकरा और भेडिया में शत्रुता है। उनके खाल में भी वह धर्म है। एक तबला बकरे के चर्म का और दूसरा भेडिया के चर्म का बनवाया है। गायन के समय दोनों तबलों को जमाया और एक तबले पर थाप लगाते ही दूसरा तबला उतर जाता है। इस पर से यही ज्ञात होता है कि निर्जीव चर्म में भी जाति के गुण धर्म होते है। इसी विज्ञान के सिद्धांत पर ही सर्वज्ञ ऋषियों ने ऐसा सिद्धांत किया कि शरीर जलकर भस्म होने तक जात में परिवर्तन नहीं किया जा सकता है।

कुछ लोगों का कहना है कि अगर कोई ब्राह्मण भ्रष्ट होकर मुसलमान या ईसाई बना तो भी उसकी जात बदलती नहीं वह ब्राह्मण ही रहता है तो उसके हाथ का अन्न खाने में या उसके साथ भोजन करने में क्या आपत्ति है? उसका उत्तर यह है कि यदि वह जात से ब्राह्मण है तथापि भ्रष्ट ब्राह्मण होने से उसके हाथ का अन्न ग्रहण करना योग्य नहीं है। व्यवहार में भी भ्रष्ट पदार्थ का स्वीकार कोई विचारी मनुष्य नहीं करता है। अगर कोई खाद्य पदार्थ अमंगल स्थान पर गिरा तो कोई भी उसे खाने पर प्रवृत्त नही होता। क्योंकि वह पदार्थ भ्रष्ट हो गया। तात्पर्य मनुष्य में भी जातिभेद है और वह पूर्व जन्म के प्रारब्ध कर्म का विपाक होने से उसके जाति में परिवर्तन एक जन्म में करने का अधिकार किसी को भी नहीं है।

धर्म शास्त्र दृष्या वर्ण व्यवस्था जन्म सिद्ध है या गुण कर्मो पर अवलंबित है :-

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद यह चार वेद है। इन वेदों के छह अंग–शिक्षा, कव्य,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निरुक्त, व्याकरण, छंद, ज्योतिष, चार उपांगे :– पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र, चार उपवेद :– आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्व वेद, अर्थ शास्त्र, मिलकर अठारह विद्या है। इनमें चार वेद अपौरुषेय स्वतः प्रमाण है। वाकी की सब विद्याएँ सर्वज्ञ ऐसे ऋषियों ने वेद के अर्थ का खुलासा करने के लिये है और पौरुषेय है। इन सब विद्याओं का अध्ययन करने के पश्चात ही वेदों का सही अर्थ समझता है। पर प्रस्तुत काल धर्म के लिये वडा कठिन है। भागवत् गीता यह ग्रंथ आज सबको परिचित है। उसमें भी भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि चातुर्यर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः ऋग्वेद में जो पुरुष सूक्त है उसमें भी यही कहा गया है। ब्राह्मणोऽस्य मुख मासीद्वू राजन्यः कृतः ।। "संभाव्य वेद मूलत्वात् स्मृतीनां मानतोचिता" इस प्रकार वर्ण व्यवस्था उत्पत्ति सिद्ध है ऐसा मृतिवचन हैं।

जन्माना जायते शूद्रः संस्काराद्विज उच्यते।
विधया याति विप्रत्वं ब्रह्मवित् ब्राह्मणो भवेत् ।।

इसका अर्थ यह है कि कोई भी पुरुष प्रथम शूद्र होता है। इसका अर्थ शूद्र यह सर्व सामान्य जात है। उस शूद्र को उपनयनादि संस्कार से द्विज बनाया जाता है। द्विर्जाय तेति द्विजः, यानि दो समय जिसका जन्म होता है उसे द्विज कहते है। दांतों को भी द्विज कहते है। वही वेद विद्या पठन करने से "विप्र" इस संज्ञा के पात्र होता है और वही शूद्र ब्रह्म ज्ञानी होने से ब्राह्मण के पद को प्राप्त होता है। ब्राह्मण किसे कहना ? जीव को ब्राह्मण माना जाए तो अतीत अनागत वर्तमान सब शरीरों में जीव एक ही है। एक जीव को ही कर्म के कारण अनेक देह प्राप्त होते है। इसलिये क्या जीव को ब्राह्मण मानना पडेगा। पर जीव को ब्राह्मण कहा नहीं जा सकता।

देह ब्राह्मण है ऐसा अगर मानेंगे तो देह पांच भौतिक सब समान ही है। ब्राह्मण यह सफेद, क्षत्रिय लाल, वैश्य पीला और शूद्र काला ऐसा भी वर्ण भेद नहीं है। अतः देह को भी ब्राह्मण कहा नहीं जा सकता। जाति को ब्राह्मण समझेंगे तो वहुत से महर्षि अलग अलग जाति में उत्पन्न हुये। जैसे हरिणी से ऋष्यश्रृंग, कुश से कौशिक, कलश से अगस्त्य, उर्वशी से वशिष्ठ, इत्यादि। अतः जाति को भी ब्राह्मण नहीं कहा जा सकता। ज्ञान को ब्राह्मण कहेंगे तो, क्षत्रिय में जनक, श्रीराम, यह भी वडे ज्ञानी थे। तो क्या उन्हें ब्राह्मण कहना चाहिए ? इसलिये ज्ञान को भी ब्राह्मण नहीं कह सकते। कर्म को ब्राह्मण मान लेंगे तो सब प्राणियों का संचित-प्रारब्ध-क्रियमाण कर्म समान है। जो धार्मिक वह ब्राह्मण मानेंगे तो क्षत्रिय, वैश्य आदि भी धार्मिक होते है। तो फिर सही ब्राह्मण कौन ? तो जो नित्य शुद्ध वुद्ध सच्चिदानन्द परब्रह्म का जिसे अपरोक्ष ज्ञान हुआ और जो शमदमादि सद्गुण सम्पन्न, राग द्वेषादि रहित, सर्वभूत मात्रमे आत्मभाव रखने वाला वही ब्राह्मण कहलाया जाता है।

वर्ण व्यवस्था पर ही अपने पूरे आचार आधारित है। उसमें शैथिल्य उत्पन्न होने से वर्ण संकर होकर धर्म विप्लव हुआ तो समाज और राष्ट्र का विनाश होने को विलम्ब नहीं लगेगा। वैदिक धर्म में शुद्ध विवाह संस्था, सुप्रजा जनन, नित्य नैमित्तिक आचार तथा संस्कार, स्पर्शास्पर्श विचार, अन्तोदक व्यवहार, राष्ट्रोत्कर्ष, अध्यात्म उन्नति, आदि को वर्ण व्यवस्था ही आधारभूत है।

गुण का अर्थ सत्व इज तम, कर्म का अर्थ कर्त्तव्य। जन्मतः सत्व गुण प्रधान जो ब्राह्मण उसकी शमदमादि स्वकर्तव्यें, रजोगुण, प्रधान जो क्षत्रिय उसकी शौर्यादि कतव्यें, तम उपसर्जन रजो-गुण प्रधान जो वैश्य इनको कृष्यादिकर्में, रज उपसर्जन तम प्रधान जो शूद्र इनकी शुश्रुषा आदि कर्में ऐसे चार वर्ण परमेश्वर ने उत्पन्न किये। जेसे राज व्यवस्था रखने के लिये, शासक अलग अलग स्थान निर्माण करके उन स्थानों की संज्ञा तथा उस स्थान पर जो आरुढ़ होगा उसकी कर्तव्यें निश्चित करता है, अधिकारी नही। उसी प्रकार वर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यवस्था जन्म सिद्ध मानना आवश्यक है।

श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता शास्त्र का उपदेश किस प्रसंग पर तथा किसलिये किया यह बात सर्व श्रुत है। अर्जुत जन्मतः क्षत्रिय था। पर वह शोक मोह से व्याप्त, किंकर्तव्य मूढ होकर श्रीकृष्ण को शिष्य भाव से शरण गया और "मैं युद्ध नहीं करना चाहता हूँ, भिक्षा मांग कर अपना जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ", इस प्रकार क्षत्रिय कर्म छोडकर ब्राह्मण धर्म यानि पर धर्म की ओर उसकी प्रवृती हुई। इसलिये सही कल्याण किसमें है इसका उपदेश करने के लिये तथा उसका व्यामोह दूर करके क्षात्र धर्म में प्रवृत्त होने के लिये भगवान श्रीकृष्ण को गीता शास्त्र का उपदेश अर्जुन को करना पडा। द्रोणाचार्य तथा अश्वत्थामा यह दोनों ब्राह्मण कुलोत्पन्न थे। उन्होंने ब्राह्मण का कर्त्तव्य जो वेदाध्ययन के साथ क्षत्रिय विद्या में भी निष्णात थे और युद्ध कर्म भी किया। पर उन्हें कोई क्षत्रिय नहीं समझता। अश्वत्थामा ने जब पांडवों के पांच पुत्रों की हत्या की तब अर्जुन ने उसे पकडकर द्रोपदी के सामने लाकर उसका शिरच्छेद करने को प्रवृत्त हुआ। पर उस समय द्रोपदी ने जो विचार प्रकट किये वे अति महत्वपूर्ण है। वह कहती है कि इस नीच ने यदि अधम कृत्य किया तथापि यह जात का ब्राह्मण होने से इसका वध मत करो। यह सुनकर जब अर्जुन ने कृष्ण की ओर देखा तो कृष्ण ने कहा कि ब्राह्मण का कभी भी प्रत्यक्ष वध नहीं करना चाहिये। तथापि उसका वपन करके और उसकी पूरी सम्पत्ति हरण करके उसे देश के बाहर निकाल देना चाहिए। यही उसका वध है। भगवान ने बहुत से संतों का उद्धार किया पर उन्हें ब्राह्मण किया ऐसा कहीं दिखाई नहीं दिया।

पितामह भीष्म का उदाहरण इस प्रसंग पर बडा उचित है। भीष्म कुरू कुल में वयोवृद्ध ज्ञान वान तथा धनुर्विद्या में निष्णात थे। इसीलिये दुर्योधन ने भीष्म को प्रथम सेनापति बनाया। ऐसा होते हुए भी कौरव पांडवों को द्रोणाचार्य द्वारा अध्ययन करवाया। स्वयं सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी आचार्य की उपाधी उन्होंने कभी नहीं लगाई। क्योंकि वह अधिकार जन्म सिद्ध ब्राह्मणों का ही है।

विश्वामित्र क्षत्रिय का ब्राह्मण हुआ तो हम क्यों नहीं बनना ऐसा कुछ लोगों का कहना है। पर विश्वामित्र की उत्पत्ति ब्रह्म बीज से हुई थी यह बहुत कम लोग जानते है। महाभारत के अनुशासन तथा शांति पर्व में विश्वामित्र का इतिहास दिया गया है। अगर कोई बडा पराक्रमी है तो हम उसे व्याघ्र है करके संबोधते है। इसका अर्थ वह व्यक्ति व्याघ्र कर्म नहीं करता। वह व्याघ्र है इसका अर्थ व्याघ्र सदृश है। उसी प्रकार कोई स्वधर्म निष्ठ शूद्र जाति में उत्पन्न हुआ मनुष्य ब्राह्मण समान समझेंगे परन्तु कोई उसे ब्राह्मण समझकर श्राद्ध में नहीं बुलाएगा या कोई ब्राह्मण उसे अपनी पुत्री नहीं देगा। कुछ वर्ष पहले तुकाराम, नामदेव, दर्जी, रेना न्हाई, सावता, जनाबाई, मीराबाई, रोहिदास इत्यादि स्वधर्म निष्ठ और सद्‌गुण सम्पन्न बहुत सन्त महात्मा हुए। और वे सभी पूज्यता के दृष्टि से आचार भ्रष्ट ब्राह्मण से श्रेष्ठ समझे जाते थे। पर उन्होंने कभी हम ब्राह्मण है ऐसा सिद्ध करने का प्रयत्न नहीं किया। प्रचार करना अलग बात है और वास्तव में आचरण में लाना अलग। ऐसे कितने नेता है जो अपने पुत्र का विवाह हरिजन की पुत्री से करते है? जातिय विषमता से भी बडा भयानक प्रश्न है आर्थिक विषमता। ऐसे कितने धनवान है जो सही अर्थ से दलित और गरीबों की सहायता करते है? ब्राह्मणों के हाथ में था ही क्या? राज सत्ता क्षत्रियों के हाथ में थी और अर्थ वैश्यों के हाथ में। ब्राह्मण एक बुद्धिजीवी प्राणी था और है। तथापि इसमें सन्देह नहीं कि कुछ द्विज अपने ही बंधुओं को घृणा और तिरस्कृत दृष्टि से देखते है। स्पर्शा-स्पर्श का अर्थ है स्वच्छता और अस्वच्छता। हमारे घर में भी हम स्पृष्यास्पृष्य मानते है। अगर पुत्र स्नान करके पूजा पाठ कर रहा हो और उसके पिता का स्नान नहीं हुआ हो तो वे पुत्र को स्पर्श

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नही करते। इसका अर्थ इतना ही है के वे अभी शुद्ध यानि स्वच्छ नही है। उस समय पुत्र यह कभी नही सोंचता के पिता उससे नीच है। और यद्यपी उनका स्पर्श हुवा तो कोई पाप लगा। वही प्रकार इतर मनुष्यों के साथ भी होता है। हमारे शरीर में भी चार वर्ण है। पर हम अपने पादादि अंगों को शरीर से अलग करेंगे तो हम कोई कार्य ही नही कर सकेंगे। अत: चारों वर्णों का समाज में अस्तित्व आवश्यक है। जैसे किसी यंत्र में छोटे से छोटे विभाग का भी बडा महत्व होता है। उनके सिवा वह यंत्र कार्य ही नही कर सकता ठीक उसी प्रकार इन चारों अंगो के बिना समाज और राष्ट्र चल नही सकता।

वर्ण संकर से जातियाँ उत्पन्न होती है। जो प्रथम ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुवा और वेद-शास्त्रोक्त निष्काम कर्मानुष्ठान और उपासना इत्यादि साधनो द्वारा जिसकी चित्तशुद्धी और चित्तैकाग्र हुवा और जो साधन चतुष्टय संपन्न होकर तथा गुरु के द्वारा महा वाक्य का उपदेश होने के पश्चात श्रवण मनन, निदिध्यासनादि साधनों का परिपाक होकर अखंड ब्रह्माकार रूप, तत्वज्ञान से अज्ञान निवृत्ति द्वारा कैवल्यस्थिति को जो प्राप्त होता है वह सही अर्थ से ब्राह्मण कहलाने के पात्र है। जन्म से जाति निश्चित करने से वंश परंपरा समझती है और अनुवंशिक गुणों का विकास होता है। वैदिक समाज की रचना कर्त्तव्य तत्व पर हुई है।

संतती तीन प्रकार की है। १) सवर्ण २) अनुलोम तथा ३) प्रतिलोम। शास्त्रोक्त विधी से विवाहित सवर्ण सभी पुरुषों को जो संतती होती है उसे सवर्ण संतती कहते है। यह शुद्ध मानी जाती है। पुरुष से निकृष्ट और माता से उत्कृष्ट संतती को अनुलोम संतती कहते है। तथा उत्कृष्ट वर्ण की स्त्री और निकृष्ट वर्ण का पुरुष इनसे जो संतती होती है वह व्यभिचार जन्य होने से निकृष्ट है। क्यों किप्रतिलोम विवाह को शास्त्र की आज्ञा नही है कुंड, गोळक आदि संतती भी शास्त्र निषिद्ध होने से उन्हे ब्राह्मण धर्म का अधिकार नही है। पति जीवित होकर जरासे जो पुत्र होता है उसे कुंण्ड, पति मृत होने पर विधवा स्त्री को जो पुत्र होता है वो कानीन, गर्भधान होकर विवाह होता है तो उस संतती को सहो ढज कहते है। यह सभी ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर भी द्विज धर्म के अधिकारी नही है। जो स्त्री पति को त्याग कर विवाह के बिना दूसरे सवर्ण पुरुष का आश्रय लेती है वह स्वैरिणी कहलाती है। तात्पर्य देहाभिमान न रखते हुए और किसी का भी द्वेश या तिरस्कार न करते हुए प्रत्येक मनुष्य को अपने-अपने स्वधर्म का आचरण करने का यथोचित प्रयत्न करना चाहिये यही इस पूरे विवेचन का रहस्य है।

श्री पाठात्मक कोटि चण्डी महायज्ञ के प्रवर्तक

परशावत ब्रह्मर्षि उपेन्द्रशुक्ल महाराज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीमद्भागवत भगवान श्री कृष्ण का ही स्वरूप

(गतांक से आगे)

—डा. वेदप्रकाश शास्त्री

दशम स्कन्ध के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध भगवान श्रीकृष्ण के शैशव, पौगण्ड, किशनेर और तारुण्य की लीलाओं का वर्णन है। इसी के अन्तर्गत उनके शौर्य, औदार्य सख्य, वात्सल्य, प्रणय, क्रोध, आदि का चित्रण इस कमनीयता से हुआ है कि पाठक श्रोता आत्म विभोर होकर रह जाता है और उसी स्थिति में जा पहुंचता है जिसे योगी ब्रह्मी स्थिति अथवा ब्रह्मानन्दानुभूति की दशा कहते हैं। क्योंकि यह स्थिति प्राण और ब्रह्मरंध्र के संयोग तथा उसके परिणाम स्वरूप ब्रह्मरंध्र से स्रवित होने वाले अमृत के पान से उत्पन्न होती है अतः प्रस्तुत स्कन्ध के अध्ययन, श्रवण, मनन, निदिध्यासनादि में उसी स्थिति को परिलक्षित कर दशम स्कन्ध को ब्रह्मरंध्र कहना पूर्णतः समीचीन है।

ग्यारहवें स्कन्ध को भगवान के मन रूप में मान्यता प्रदान की गयी हैं। इस स्कन्ध में उपहास के दुष्परिणाम स्वरूप यादव वंश का विनाश, माया और उसकी निवृत्ति, ब्रह्म और कर्म, भगवान के मनोरम अवतार, अभक्तों की दुर्गति युगानुसार पूजा का विधान, उद्धव को ज्ञानोपदेश, दत्तात्रय जी के १६ गुरुओं, वेदमुक्त आदि के लक्षण, सत्संग की महिमा, सिद्धियां, भगवान् की दिव्य विभूतियां चारों वर्ण, चारों आश्रम, कर्म, ज्ञान और भक्ति योग, कामी पुरुषों के गुण, दोष जन्म-मृत्यु, सहनशीलता का महत्व, द्वंद्व निवृत्ति का उपाय, क्रियायोग, ज्ञानयोग, भगवत्प्राप्ति का परम साधन भक्तियोग भगवान श्रीकृष्ण का गोलोक प्रस्थान आदि का निरूपण हुआ है।

मन को बंधन और मोक्ष का कारण माना गया है—"मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः। प्रस्तुत स्कन्ध में विशेषतः इसी बात पर विचार किया गया है। माया के चक्कर में मनुष्य क्यों और कैसे पड़ता है। उसका परिणाम क्या होता है और उससे मुक्ति किस प्रकार मिलती है। वर्ण और आश्रम धर्म का पालन किस प्रकार करना चाहिए और उसका फल क्या है? भगवत्प्राप्ति का सुगम उपाय क्या है? उसे किस प्रकार प्राप्त किया जाए क्योंकि भगवान "मुक्तिंददाति कर्हि चित्स्म् न तु भक्ति योग्म्" इसकी पूर्ति हेतु भक्तियोग आदि कार व्यापन हुआ है। समष्टि रूप में मन के उदात्तीकरण की सामग्री से सम्पन्न इस स्कन्ध को भगवद् मन रूप में मान्यता समीचीन ही है।

बारहवें स्कन्ध को भगवान श्रीकृष्ण की आत्मा कहा गया है इस स्कन्ध में कलियुगी राजाओं का वंश वर्णन, कलिदोष, कल्कि अवतार, राजाओं को भूमि की चेतावनी, युगधर्म, कलि दोष निवारण सुगम अथच अमोघ उपाय भगवत्स्मरण—

कलौर्दोषनिधेराजन्नस्ति ह्येको महान् गुणः।
कीर्तिनादेव कृष्णस्य मुक्तसंगः परं व्रजेत ।।

चार प्रकार के प्रलय, स्वरूप ज्ञान द्वारा परिक्षित का तक्षक जन्म, मृत्यु भय का निवारण, परीक्षित मोक्ष, सर्पयज्ञ, वेद शाखाओं का विभाजन पुराण लक्षण, विभाजन, मार्कंडेय चरित्र, नर-नारायण का प्रादुर्भाव, आदि का वर्णन हुआ है।

शरीर में आत्मा का स्थान सर्वोपरि होता है। आत्मा को न्याय शास्त्र वेत्ताओं ने द्विविध प्रतिपादित किया है।

(क्रमशः)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभकामनाओं सहित

फोन नं. ४२२८९, ४४०२७

पन्नालाल हीरालाल भांगडिया

नगारखाना बेगमबाजार,

हैदराबाद – ५०० ०१२

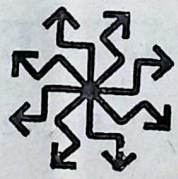

गत ८३ वर्षों से शुद्ध P. H. B. एग मार्क घी के लिए प्रख्यात

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

With best compliments from:

Phones: { Shop: 42725
Resi. : 52069

GUJRAT PAINT & HARDWARE MART

Iron, Hardware & Paints Merchants & Govt. Suppliers

Afzal Gunj, Sardar Patel Road,
HYDERABAD-500 012

With best compliments from:

COMBINE AGENCIES
22-6-1062, Inside Kalikaman, Gulzar Houz,
HYDERABAD-500 002

Distributors for:
RASASHRAM, Gondal.
AYURVIN PHARMACEUTICAL, Bombay.
NAGARJUNA PHARMACEUTICAL, Nasik.
SHREE SHANKER AYURVEDA PHARMACY.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिद्ध - सावर - महालक्ष्मी मन्त्र

[काव्यतीर्थ पं० श्री चन्द्रभूषण शास्त्री चित्तौड़ गढ़, राजस्थान]

वर्तमान समय में मध्यम श्रेणी का मानव अर्थाभाव से अत्यन्त दुःखी है। वह अपने बल पौरुष से जितना कमा लेता है वह उसके भरण पोषण के लिए पर्याप्त नहीं होता। कोई डिग्री प्राप्त हैं तो नौकरी नहीं मिलती। उन्हें दर दर की ठोकरें खानी पड़तीं हैं। महगाई बहुत है जिसके कारण भ्रष्टाचार लूटमार डकैतियां छुरेबाजी आदि दुराचार बढ़ते जा रहे हैं। कई तो इस दारुण काल में दुःखी होकर आत्महत्याएं भी कर रहें हैं।

"बुभुक्षितः किं न करोति पापम्।" यह ध्रुवसत्य है कि जहां मानवीय बल समाप्त हो जाता है वहां दैविक बल ही सहायक होता है। जो इष्टोपासना मन्त्र साधना मन्त्र लेखन आदि से सम्भव है। कर्मों का जाल बडा कठिन है। जिसे सुलझाने के लिए मान्त्रिक बल ही समर्थ है। श्रीगोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में --

मेटत कठिन कु अंक भाल के (मानस)
प्रभु कृपा क्या नहीं कर सकती? मान्त्रिक बलों के अनुभव अनादिकाल से चले आ रहे हैं। उन मन्त्रों की प्रामाणिकता साधकों की अनुभूतियां उपलब्धियां व प्राप्त सिद्धियां ही हैं।

मन्त्र अनेक हैं और देवता भी भिन्न-भिन्न हैं तथा साधन विधियां भी कामना के अनुसार भिन्न ही हैं।

'अमन्त्रं अक्षरोनास्ति नास्ति मूल मनौषधम्।
अयोग्यः पुरुषोनास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः।।'

कोई अक्षर अमन्त्र नहीं है। कोई भी तृणमूल अनोषध नहीं हैं। कोई मनुष्य अयोग्य नहीं है। किन्तु इन सब का संयोजक दुर्लभ हैं।

आज मैं यहां सभी धन के इच्छुक आस्तिक बन्धुओं के हितार्थ एक अनुभूत एव अमोघ तथा आशुफलप्रद 'सिद्ध सावर महालक्ष्मी मंत्र' का उल्लेख कर रहा हूं-- जो आर्ज एवं शास्त्रीय भी है, और अनुभव सिद्ध भी। विधिवत इस मन्त्र के जपरूप अनुष्ठान भी होते हैं तथा विधि - विधान सहित घर पर भी साधक अपने मनोरथ की सिद्धि अनायास ही प्राप्त कर लेता है।

व्यापार, व्यवसाय में वृद्धि, धन प्राप्ति के रुके हुये मार्गों का विकास, नौकरी की प्राप्ति, उलझे हुये धन का लाभ अपने ही मकान में गड़े हुये धन की उपलब्धि आदि फलरूप सिद्धियां देखी जा रही हैं। अपनी-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपनी कामनाओं के अनुसार जप - जाप साधन की विधियां कुछ अलग-अलग भी हैं। वह पोस्टेज भेज कर मुझ से पूछी जा सकती है। जिसकी कोई फीस नहीं होगी। यह दुःखी एवं धनाभाव से पीड़ित परिवारों की निःस्वार्थ सेवा मात्र है।

मन्त्र छोटा है लेकिन बड़ा विलक्षण है। धनदाता है। अभाव को वैभव में परिणत करने वाला है। इस मन्त्रकी अलौकिक शक्ति है जो भगवती महालक्ष्मी को शीघ्र ही प्रसन्न कर देती हैं। यहां यह उक्ति स्पष्ट देखी गई हैं।

"मन्त्र परम लघु जासु
बस विधि हरि हर सुर सर्व।"

मेरा यह दृढ़ निश्चय है कि अनुभवहीन अपरीक्षित प्रयोग मैं नहीं दिया करता हूं। साधक विश्वास करें और करके देख। कि बहुना।

इस मन्त्र के अंगन्यास करन्यास ध्यान संकल्प विनियोग भी हैं। जो बाद में दे रहा हूं। वह सर्व साधारण के गम्य भी नहीं हो सकेंगे। इन्हें केवल महालक्ष्मी के सामने जितने भी हो सके पूजा विधि पूर्वक केवल मूल मन्त्र का ही जप कर लेना चाहिये। लक्ष्मी जी का चित्रपट सामने हो। और उस पर गंध-अक्षत धूप-दीप पुष्पमाला चढ़ाई जाय तथा मिश्री मिला दूध का भोग लगाया जाय। मन्त्र का जप अधिक हो तो अच्छा अन्यथा १०८ से कम न हो। यही विधान प्रातः व सायं दोनों समय किया जाय ऐसे साधक के लिए कोई यम नियमों का बन्धन नहीं है। महानुष्टान जो (१।) सवा लाख या इससे अधिक जप तथा दशांश हवनादि का है। वह तो महान कार्य की सिद्धि के लिए उसी रूप में ही करना होता है। वह खर्चीला अवश्य, परन्तु परिणाम में अवश्य लक्ष्य की सिद्धी देने वाला है।

आसानी से १।। घटे में इसके जप एक हजार हो सकते हैं। वे दो बार करके भी किये जा सकते है।

मूल मन्त्र इस प्रकार है--

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिन्यै महालक्ष्म्यै अस्माक दारिद्रयम नाशय प्रचुरं धन देहि देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ'

इसके न्यासादि आगे के अंक में प्रकाशित करूंगा। लेख कुछ विस्तृत भी हो गया है तथापि कोई महानुभाव प्रकाशन के पूर्व भी न्यासादि जानना चाहें तो मैं उन्हें सहर्ष स्पष्ट लिखूंगा। उन को मेरे पास पोस्टेज भेजना आवश्यक होगा, अन्यथा कोई उत्तर नहीं दिया जायेगा।

पूर्व अंक में प्रकाशित दुर्गेश महामन्त्र के साधकों की सफलता सूचक चिट्ठियां आ रही हैं जिसकी प्रसन्नता है। वह दुर्गेश महामन्त्र भी साधक सज्जनों के हितार्थ यथा समय प्रस्तुत करूंगा।

पुनश्च--स्पष्ट अक्षरों में उपरोक्तमन्त्र--

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिन्यै महालक्ष्म्यै अस्माकं दारिद्रयं नाशयं प्रचुर धनं देहि देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री देवी भागवत

❀ सूचिता बहन

(गतांक से आगे)

ऋषिगण बोले -- हे महाभाग सूत ! हमने श्री देवी भागवत का महात्म्य सुन लिया। अब श्रवण विधि सुनना चाहते हैं। सूतजी महाराज कहने लगे–हे मुनियों ! अब इस पुराण की श्रवण विधी आपको बताते हैं :

"नराणां श्रृण्वतां येन सिद्धी:
स्यात्सार्व कामिकी ।"

इसे सुनने वाले मनुष्यों की सब कामनायें पूर्ण हो जाती हैं। पुराण श्रवण का इच्छुक मनुष्य सर्वप्रथम ज्योतिषी को बुला कर कोई शुभ मुहूर्त निश्चित कर ले। ज्येष्ठ मास से लेकर आगामी छः महाने कथा श्रवण के लिए शुभ होते हैं। हस्त अश्विनी, मूल, पूष्य-रोहिणी, अनुराधा, मृगशिरा तथा श्रवण नक्षत्र और शुभ बार को पुराण श्रवण शुभ होता है। जिस नक्षत्र में बृहस्पति हो उससे ४-४-१-५-६-४, ३ हों तो क्रमशः धर्मप्राप्ति, लक्ष्मी प्राप्ति, कथासिद्धि, परम सुख, पीड़ा राजभय और ज्ञान प्राप्ति के फल प्राप्त होते हैं। तथा शिवोना चक्र का का शोधन कर लेना चाहिये। अथवा देवी को प्रसन्न करने के लिये चारों नवरात्रों में इसे सुनें। तिथि वार और नक्षत्र से शोधित अन्य मासों में भी इसे सुना जा सकता है। विवाह आदि के अवसरों पर जिस धूम-धाम के साथ सब सामग्रियां जुटाई जाती हैं, उसी उत्साह के साथ इस नवाहन यज्ञ के लिए भी सामग्री जुटायें। पाखण्ड तथा लोभ से रहित चतुर उदार और देवीभक्त बहुतेरे सहायकों को भी अपने साथ लेलें। बड़े यत्न पुर्वक देश-देशान्तर में भी लोगों के पास समाचार भज दें कि देवी भागवत की कथा होने वाली हैं। इसलिए आप लोग अवश्य यहां पधारिए। यह समाचार पाकर आप सब लोग इस महायज्ञ में सम्मिलित हों। फिर चाहे आप सूर्योपासक, गणपति भक्त, शिव भक्त, शक्ति के उपासक अथवा वैष्णव हों। क्योंकि उपर्युक्त सभी देवता शक्ति के भक्त होतें हैं ।

सौराश्च गाणपत्याश्च शैवाः
शाक्ताश्च वैष्णवाः ।
सर्वेषामपि सेव्येयं यतो
देवाः सशक्तमः ।।

श्री मद्देवी भागवत रूपी अमृतरस के लोलुप भक्तों को तो कथा के अर्थ में प्रेम रखते हुए अवश्य इस यज्ञ में योगदान देना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चाहिए। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्त्री ब्रम्हचर्य गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ तथा सन्यासाश्रम में निरत सभी लोग सकाम तथा निष्काम किसी भी भाव से इस कथा रूपी अमृत का पान अवश्य करें।

नावकाशः कदाचित्स्यान्नवाह श्रवणेऽपि तैः।
आगंतव्यं यथाकाल्न यज्ञे पुण्या क्षणस्थितिः॥

यदि उन्हें पूरे नवाह श्रवण का अवकाश न मिल सके तो जितना अवकाश हो उतनी देर आकर कथा सुनें क्योंकि यज्ञ में क्षण भर की पहुंच पुण्यदायक होती है। निमन्त्रण विनयपूर्वक देकर आगन्तुकों के बैठने का उत्तम प्रबन्ध करें। कथा के लिए नियत स्थान प्रशस्त होना चाहिये पहले उस स्थान की सफाई कराके गोबर से लिपवाकर उसे स्वच्छ और सुन्दर बनावें। कथा स्थान (व्यास पीठ) पर केले के खम्भों से रमणीक मण्डप बनावे उसके ऊपर ध्वजा-पताका से अलंकृत चंदवा तान दें। वक्ता के लिए मुलायम गद्दी का बिछौना इस ढंग से बिछावें कि मुख पूर्व या उत्तर की दिशा में पड़े। वक्तृत्व शक्तियुक्त, संयमी, शास्त्रज्ञ, देवी की उपासना में संलग्न, दयालु, लोभहीन, कथा कहने में निपुण और धैर्यशाली वक्ता उत्तम माना जाता है। उत्तम श्रोता वह होता है कि जो ब्राह्मण भक्त, देवता भक्त, कथा के रस में मग्न, उदार निर्लोभ विनम्र और हिंसादि अवगुणों से रहित हो।

पाखण्डी, लोभी, कामी, दिखावटी धर्मात्मा, निर्दयी और क्रोधी वक्ता देवी भागवत के यज्ञ में अच्छा नहीं माना जाता। लोगों का संशय निवृत्त करने के लिए वक्ता का सहायक एक और पण्डित भी रहना चाहिये जो पूर्ण विद्वान हो। कथा आरम्भ होने के एक दिन पहले वक्ता और श्रोता बाल बनवा लें उसके बाद नियमों का पालन करें जिस दिन कथा आरम्भ होने वाली हो उस रोज अरुणोदय काल में शौच से निवृत्त होकर स्नान, सध्या और तर्पण करे। संध्यादि कृत्य नित्य सक्षेप में करता रहे। कथा श्रवण की योग्यता प्राप्त करने के लिये गोदान करके सबसे पहले विघ्नों के नाशक गणपति का पूजन करें कलश की स्थापना के बाद दिक्पालों, बटुकों, क्षेत्रपालों योगिनियों तथा षोडश मातृकाओं का पूजन करे तदनन्तर तुलसी की पूजा करके नवगृह विष्णु भगवान और शंकरजं का पूजन करें। फिर यथोचित सामग्री से नवाक्षरमंत्र[1] से मां जगदम्बा का पूजन करे तत्पश्चात भगवती वाङ्मयी मूर्ति और सुन्दर अक्षरों में लिखी हुई देवीभागवत की पोथी का पूजन करे। कथा में आने वाले विघ्नों को दूर करने के लिये पांच ब्रह्मणों का वरण करे ये बराबर नवार्ण मन्त्र का जप दुर्गा सप्तशती का पाठ करते रहें। फिर परिक्रमा तथा प्रणाम करके देवी स्तुति करता हुआ कहे--

कात्यायनि महामाये भवानी भुवनेश्वरी।
संसार सागरे मग्नं मामुद्धर कृपामयि॥
ब्रम्हाविष्णु शिवाराध्ये प्रसीद जगदम्बिके।
मनोऽभिलषितं देवी वरं देहि नमोऽस्तुते॥

१ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे, कात्यायनि ! हे महाभागे ! हे भुवनेश्वरी ! हे कृपामयि ! संसार सागर में डूबते हुये मुझ अभागे का आप उद्धार करें ! हे ब्रम्हा विष्णु और शिवकी आराधनीया देवी आप मुझपर प्रसन्न हों ! हे देवी! मैं आपको नमस्कार करता हूं आप मुझ मन चाहा वरदान दो। इस प्रकार प्रार्थना करके मनोयोगपूर्वक कथा सुनें। संयत चित्त से साक्षात व्यास देव समझ कर वक्ता का पूजन करें माला आभूषण एवं विविधि प्रकार के वस्त्र पहनाये फिर प्रार्थना करता हुआ कहे–हे सब शास्त्रों और इतिहासों के ज्ञाता व्यासदेव आपको मैं नमस्कार करता हूं आप अपने कथारूपी चन्द्रमा को उदित करके मेरे हृदय का अन्धकार दूर करें इसके बाद नवाह यज्ञ के नियमों का व्रत ले। पहले, ब्राह्मणों का पूजन करके उन्हें बैठा दे उसके बाद स्वयं आसन पर बैठे धर्म-अर्थ काम मोक्ष-रूपी चारों पदार्थों को प्राप्त करने के लिए ग्रह, पुत्र, स्त्री तथा धन की चिन्ता त्याग कर सावधानी के साथ कथा सुने। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक कथा बांचे दोपहर के समय मुहूर्त भर विश्राम अवश्य करलें। मल मूत्र वगैरा काबु पाने के लिए हल्का भोजन करें श्रोता दिन-रात के वक्त एक बार हविष्यान्न खाकर रहें अथवा फलाहार, दूध पीकर रहें कहनेका तात्पर्य यह है कि ऐसा आहार न करें जिससे कथा सुनने में बाधा उपस्थित हो। कथा श्रवण करने वालों का नियम इस प्रकार है। जो लोग ब्रह्मा, विष्णु और शिव में भेद समझते हैं जो देवी की भक्ति से हीन हैं जो पाखण्डी, हिंसक- खल, विप्रद्रोही और नास्तिक हैं ऐसे लोग देवी भागवत की कथा सुनने के अधिकारी नहीं हो सकते। ब्राह्मण धन परायी स्त्री, पराया धन, और देव सम्पत्ति हरण करने वाले लोग कथा सुनने के योग्य नहीं हो सकते। श्रोता नवाह यज्ञ के समय ब्रम्हचर्य से रहे, जमीन पर सोये, सत्यवचन बोले, इन्द्रियों पर संयम रक्खे, नित्य कथा समाप्ति पर पत्तल में भोजन करे, बैंगन, तरबूज, तेल, जल, मधु, भुनादाना, बासी अन्न, चित्त बिगाड़ने वाला अन्न न खाये मांस, मसूर, जिस पर रजस्वला स्त्री की दृष्टि पड़ गयी हो वह अन्न लहसून, मूली हींग, प्याज, गाजर, को सवथा त्याग दें, विप्रदोही, पतित, अन्त्यज, चण्डाल, रजस्वला स्त्री तथा वेद बहिष्कृत प्राणियों से सम्भाषण न करें।

वेद, गौ, गुरु, ब्राहम्ण, स्त्री, राजा, महा पुरुष देवता और देशभक्त की निन्दा न सुनें, नम्रता, सरलता, पवित्रता, दया और मितभाषण आदि सदगुणों का पालन करता हुआ मनको उदार बनाये रहें। श्वित्री (सफेद दागवाला रोगी) कोढ़ी, क्षय-रोगी, अभागा, पापी, कंगाल और निपूता व्यक्ति भी भक्तिपूर्वक यह कथा पान करें वन्ध्या (बांझ) काक वन्ध्या (केवल एक सन्तान वाली स्त्री) दुर्भगा (पतिसे परित्यक्त) जिसके बच्चे मर जाते हों और जिसका गर्भ गिर जाता है ऐसी स्त्रियां देवी भागवत की कथा अवश्य सुनें जो प्राणी बिना परिश्रम किये ही धर्म अर्थ काम-मोक्ष चाहता हो वह प्रयत्न पूर्वक कथा सुनें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्मृति नासिक की अब भी ताजा है !

❀ मदन लालजी

धू–धूसरित लालिमामय आकाश प्रचंड आंधी के आसार लिये थमी-थमी सी हवा, झिझकर झांकती, सूर्यास्त की मटमैली किरणें और गहरे स्लेटी रंगके बादल, सामने बहती दक्षिण गंगा गोदावरी को अस्त - व्यस्त लहरें, काले पत्थरों से बने हुए घाट के ऊपर अहल्या बाई होल्कर की असीम शिव भक्ति के प्रमाण स्वरूप काले पत्थरों से ही निर्मित पुरातनकाल का विशाल नारोशंकर मंदिर... अतीत की अंधेरी बारहदरी में भागता मन देख रहा हैं । ३० वर्ष पहले का वह दिन जब मैंने विवाह के पूर्व नासिक के बारे में सुना था । जब मैंने सुना कि राम की कर्मभूमि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा वर्णित पचवटी परम कुटी पतन से छाया यहीं है तब बचपन से ही राम के प्रति भक्ति-भाव में डूबा मन आहलाद से भर उठा था कि अब मुझे राम की नगरी में रहने का पुण्य-लाभ होगा ।

इसमें कोई सदेह नहीं कि यदि राम-चरितमानस की पंचवटी कहीं है तो बस यहीं है । वही दण्डकारण्य ! पांच विशाल वट वृक्षों की लटकती हुई ढेर-सी लंबी-लंबी जटाएं । कई फर्लांग के घेरे में छाया फैलाये हुए गरुड़ के पंखों जैसे पांचों बरगद के पेड़ । दूर-दूर तक हरियाली गोदावरी व कपिलगँगा का संगम ऊबड़-खाबड़ पथरीली चट्टानों से टकराता फेनिल धवल पिघली चांदी-सा गोदावरी का जल और थोड़ी-थोड़ी दूर पर झिर-झिर कर झरने वाले झरन इस भूमि को राम के तपोवन वाली गरिमा प्रदान कर रहे थे । सोचा राम के चरण-कमल इसी तट से होते हुये सुदूर लंका की ओर गये होंगे यहीं सीता हरण हुआ सूर्पनखा की नाक काटी गयी और इसी नासिका के कारण इस शहर का नाम नासिक पड़ गया ।

अन्य तीर्थ स्थानों की तरह यहां भी कुम्भ व कुम्भी का मेला लगता है । प्रयाग व हरिद्वार की तरह यहां भी पंडे-पुरोहित पिछली पीढ़ियों के बुजुर्गों की नामावली सालों पुरानी लंबी-लंबी पोथियां बगल में दबाये स्टेशन से ही यात्री का पीछा करते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं। करीब २०-३० साल पहले नासिक रोड स्टेशन से करीब ५ मील दूर बसे नासिक शहर तक आने के लिये एकमात्र साधन था तांगा। स्टेशन से शहर तक आने के लिए खास तौर से रात में काफी हिम्मत की जरूरत होती थी। तब न तो आज की तरह पूरे रास्ते चहल-पहल रहती थी। न भारत सरकार के दो-दो विशाल प्रेसों के लिए लगातार ५-६ मील तक बसाए गए—गाँधी नगर, उपनगर और नेहरू नगर थे न एक लहरे का विद्युत—केन्द्र था न नियान-लाईट की चमक-दमक और न संगमरमर का नवनिर्मित मुक्तिधाम।

पथरीले मैदानों का शहर

इतिहास साक्षी है ! कि इस क्षेत्र के पहाड़ी और पथरीला होने के कारण यहां के निवासियों को जीवनयापन के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ा है। शहर के चारों ओर फैली विभिन्न आकार की पहाड़ियों का अपना अपना महत्व है ! इन पथरीले मैदानों से जूझते हुए ही आम जनता कर्मठ जीवन जी रही है। खासकर यहां की महिलाएं मेहनत से कभी नहीं थकतीं केवल शारीरिक ही नहीं मानसिक रूप से भी यहां की महिलाओं की सहनशक्ति काफी अधिक है। ये महिलाएं मराठी जूड़ा बनाकर उसे फूलों की वेणी से सजाकर शाम के समय जब घूमने निकलती हैं, तब उनका प्रफुल्लित चेहरा देखकर अनुमान भी नहीं बनाया जासकता कि इन्होंने सुबह से शाम तक कितना अधिक श्रम किया है। जैसे पेरिस को आत्मा सीन नदी के तट पर बसती है। उसी तरह नासिक शहर की आत्मा गोदावरी तट पर इस नदी के किनारे और रामकुन्ड के आस-पास चहकती हुई बालाएं, नये फैशन में सजे युवक समुदाय और बड़े-बड़े चबूतरों पर बैठे, बच्चों सहित परिवार सूर्यास्त का रमणीय दृश्य निहारते, खट्टेमिटठे, अंगूरों, प्याज और कच्चे आम की फांकों से सजे चिवड़े का स्वाद लेते हुए गोदावरी रूपी सीन के किनारे बसे भारतीय पेरिस की याद दिलाते हैं।

पहली फिल्म "लंकादहन"

भारत का पहला सैनिक स्कूल भोंसले मिलिटरी स्कूल नासिक में ही है। भारतीय फिल्म जगत के जनक दादा साहब फालके ने अपनी पहली फिल्म लंकादहन यही बनाई थी गोदावरी नदी पर केवल मिट्टी से बनाया गया काफी मजबूत गंगापूर बांध यही हैं। जो इस कार्य में मिट्टी की उपयोगिता का प्रथम सफल प्रयास है। विदेशी खेल गोल्फ में भी बहुत पहले हीं नासिक को विश्व-स्तरीय महत्व दिया था। यहां बना गोल्फ का विस्तृत मैदान संसार में दूसरे नम्बर का माना जाता था। कहा जाता है कि ब्रिटेन के कन्जरवेटिव दल के चर्चिल और लेबर दल के एटली इस मैदान में गोल्फ खेल गये हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नासिक की समशीतोष्ण जलवायु में छापे गये नोट और डाक टिकट हर दृष्टि से उत्तम ठहरे हैं। इसी अनुकूल जलवायु के के कारण बम्बई आदि बड़े शहरों में स्थापित व्यापारी तथा बड़े बड़े अधिकारी अपना अवकाश कालीन निवास स्थान बनाने के लिये नासिक को ही प्राथमिकता देते हैं। गर्मी की छुट्टियों में यहां कारों का तांता लगा रहता है। धर्मप्रवण गुजराती सेठ परिजनों के साथ धर्मशालाओं में ठहरते हैं। और तीर्थ यात्रा का पुण्य लेते दिखाई देते हैं। पर्यटक बम्बई की उमस भरी गर्मी से त्रस्त बड़े-बड़े होटलों की शोभा बढ़ाते हैं। आजकल नासिक के प्राकृतिक सौंदर्य पर फिल्म वालों की भी विशेष नजर हैं।

सात पहाड़ों वाली देवी

गोदावरी का उदगम स्थान त्र्यम्बकेश्वर यहां से केवल कुछ मील दूर है। सात पहाड़ों पर स्थित सप्त शृंगी देवी का मन्दिर नैसर्गिक सुन्दरता में अद्वितीय है। शहर के बाहर कई नई औद्योगिक संस्थाएं भी बनी हैं जो उपयोगी वस्तुओं का निर्माण कर रही हैं। नासिक निरन्तर चारों ओर से बढ़ रहा हैं। प्रसिद्ध होता जा रहा है। पुराने नासिक के काजीपुरा और कोंकणीपुरा में बीजापुर के आदिलशाह की बनवाई हुई नक्काशीदार और मुगल शैली की पुरानी हवेलियां इस बात की याद दिलाती हैं कि इसी जगह का नाम गुलशनाबाद था।

क्रांतिवीरों की भूमि !

अपनी स्फूर्तिदायक कविताओं द्वारा क्रांति वीरों को जोश दिलाकर प्रसन्नता से मृत्यु को गले लगाने वाले राष्ट्र कवि गोविंद और जय भारत के गीत गाने वाले कवि रेवरेण्ड टिलक दोनों हीं नासिक के ही थे। देश भक्तों पर अत्याचार करने वाले अंग्रेज़ कलेक्टर को गोली से उड़ाकर वन्दे मातरम का जयघोष करते हुये फांसी पर चढ़ने वाले क्रांतिकारी वीर कान्हेरे यहीं के थे। सामाजिक और राजनीतिक क्रांति तथा ललित साहित्य के निर्माण में यहां का इतिहास पीछे नहीं है। राम गणेश गडकरी का साहित्य जिन लोगों ने पढ़ा है वे इस बात की पुष्टि करते है। अपने प्रगाढ पांडित्य और अमोघ वक्तव्यों से पुरानी रूढ़ियों का कल्मष धोने वाले जगद्गुरु डा. कुर्तकोटी की जीवन संध्या यहीं बीति है। शिवाजी का शौर्य, अहल्यावाई होल्कर की धार्मिकता मुगलों की लालसा, पेशवाओं का राजनीतिक षडयंत्र और वनवास के समय की अरण्यकाण्ड में वर्णित राम की कार्यस्थली, गंगा बड़ी गोदावरी तीरथ बड़े प्रयाग' इन सबने मिलकर नासिक को सम्मिलित प्रसिद्धि प्रदान की है। तपोवन के लिये कवि मैथिली शरण गुप्त ने साकेत में लिखा था—

अवध को अपना वर त्याग से
वन तपोवन-सा प्रभु ने किया।

फिर भी, यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि यहां की मिट्टी में मिस्र की 'ममी' वाला मसाला मौजूद हैं ! जो वर्षों तक व्यक्ति जैसे का तैसा बनाये रखता है। न उम्र का असर, न बुढ़ापे का प्रभाव।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

M/s. RAMKRISHNA AGARWAL

SHIVAJI ZARDA

23-6-974, SHAH-ALI-BANDA, HYDERABAD-A. P.

With best compliments from :

M/s. PRADEEP AGENCIES
(For RAVI FANS)
23-6-974, Shah-ali-banda, Hyderabad-A. P.

M/s. JUPITER INDUSTRIES
(For ALL TYPES OF CYCLES & CYCLE PARTS)
15-9-614, Siddiamber Bazar, Hyderabad-A. P.

M/s. SOUTH INDIA ELECTRICAL AGENCIES
(For TULU WATER PUMP)
Jambagh, Hyderabad-A. P.

M/s. BANARAS SAREE MUSEUM
(For ALL TYPES OF BANARAS SAREES)
Urdugalli, Pathergatti, Hyderabad A. P.

M/s. PREETI SALES CORPORATION
(Main Dealer for TULU WATER PUMP)
Rashtrapathi Road, Secunderabad A. P.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनवर्त्त चल रहे श्री पाठात्मक कोटि चण्डी महायज्ञ के प्रवर्त्तक

श्री ब्रह्मर्षि उपेन्द्र शुक्ल द्वारा प्रेरित भवानी-रत्न धार्मिक मासिक

(वेद, वेदांग, यंत्र, मंत्र, तंत्र अध्यात्म ज्योतिष भारतीय संस्कृति की प्रतिनिधि पत्रिका)

संरक्षक व विशेष सहयोगी : श्री के. सूर्यनारायण, कुमदनीकुंज, किंग रोड, हैदराबाद (आं. प्र)

संरक्षक :
१) श्री पूरणदासजी रणछोडदासजी, गुलजार हौज, हैदरावाद (आं. प्र.)
२) श्री मातादीनजी अग्रवाल, गोपाल सिल्क स्टोर्स, पत्थरगट्टी, हैदरावाद
३) श्री राजेन्द्रकुमारजी गुप्ता, २१-१-३९०, रिकावगंज, हैदरावाद (आं. प्र.)
४) श्री के. मनोहर रेड्डी, ३-६-१०७, हिमायत नगर, हैदरावाद (आं. प्र.)

सहयोगी सदस्य :
१) श्री छवीलदास माणिकदास एण्ड ब्रदर्स, तुरुप बाजार, हैदरावाद (आं. प्र.)
२) श्री रामकृष्ण अग्रवाल, शिवाजी जर्दा, शाहअली बंडा, हैदरावाद (आं. प्र.)
३) श्री विठ्ठलदासजी, हरकिशनदासजी हरलोचनदासजी, आविद रोड, हैदरावाद.
४) श्री घनश्यामदास भाई, ओम ट्रेडिंग कम्पनी, राष्ट्रपति रोड, सिकन्दरावाद.
५) श्री हेमन्तकुमार, हेमन्त एन्टरप्राईजेस, राष्ट्रपति रोड, सिकन्दरावाद (आं. प्र.)
६) श्री रा. रा. भगवानदासजी, गुजरात पेन्ट एण्ड हार्डवेयर मार्ट, हैदरावाद.
७) श्री महेन्द्रकुमार, बेंगल ट्रेडर्स, गुलजार हौज, हैदरावाद (आं. प्र.)
८) श्री गोपीकिशन दामाणी, दामाणी टेक्सटाईल कम्पनी, हैदरावाद (आं. प्र.)
९) श्री गोविन्दनारायणजी राठी, वेंकटेश्वर पेपर मार्ट, ईसामिया बाजार, हैदरावाद.
१०) श्री छगनलालजी नारायणजी, मछली कमान, हैदरावाद (आं. प्र.)
११) श्री डी. एल. अग्रवाल, कुमद कुन्ज, हैदरावाद (आं. प्र.)
१२) एम. पूनमचन्द ज्वैलर्स, चारकमान, हैदरावाद (आं. प्र.)

वार्षिक सहयोगी :
१) श्री ज्ञानीरामजी अग्रवाल, चन्द्रा ट्रांसपोर्ट कम्पनी, बेगमबाजार, हैदरावाद.
२) श्री अमरनाथजी गुप्ता, पत्थरगट्टी, हैदरावाद (आं. प्र.)

---

१) जो सज्जन ५००१) पांच हजार एक तथा इससे उपर सहयोग देंगे वह श्री भवानी रत्न मासिक तथा श्री पाठात्मक कोटि चण्डी महायज्ञ दोनों का संरक्षक के रूप में माना जाएगा। उनका नाम सबसे उपर लिखा जाएगा।

२) जो सज्जन २५०१) दो हजार पांच सौ एक रुपये सहायता देंगे वे आजीवन संरक्षक रहेंगे और उनका नाम आजीवन संरक्षक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

३) जो सज्जन १५०१) पन्द्रह सौ एक रुपये देंगे वे भवानी रत्न के आजीवन सहयोगी सदस्य होंगे।

४) जो सज्जन ११००) ग्यारह सौ रुपये वार्षिक सहायता देंगे वे भवानी रत्न के संरक्षक होंगे और नाम संरक्षकों की सूची में प्रकाशित किया जायेगा।

५) जो सज्जन ५०१) पांच सौ एक रुपये वार्षिक सहायता देंगे वे भवानी रत्न के वार्षिक सहायक माने जायेंगे और उनका नाम सहायकों में प्रकाशित किया जायेगा।

६) जो सज्जन २०१) रुपये देंगे वे आजीवन ग्राहक रहेंगे।

आजीवन ग्राहकों का नाम अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री भृगु ज्योतिष अनुसन्धान केन्द्र

२२-६-७३९, श्री पाठात्मक कोटि चण्डी महायज्ञ

पंजेशाह देगचीगली, हैदराबाद (आं. प्र.)

प्रिय महोदय,

हमारे कार्यालय में जन्म पत्रिका द्वारा आयु, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीर का दुःख-सुख भाग्योदय आदि अनेकानेक विषयों पर पूरा-पूरा विचार किया जाता है और आवश्यकतानुसार वर्षफल भी बनाये जाते हैं।

- ❋ उच्चकोटिक विद्वानों की समिति सपरिश्रम फलादेश प्रस्तुत करती है।
- ❋ जन्म पत्रिका बनाने हेतु अष्टक वर्ग षोडषांश सहित
- ❋ सप्तवर्गीय षट्वर्गीय साधारण लग्न ग्रह स्पष्ट नवांश
- ❋ वर्षफल पूर्ण विवरण सहित साधारण
- ❋ विवाह के लिए मिलान प्रश्न कुण्डली
- ❋ व्यापारिक तेजी मंदी चांस मासिक
- ❋ साक्षात्कार के लिए पूर्वानुमति पत्र व्यवहार द्वारा प्राप्त की जा सकती है।
- ❋ विशेष परिस्थितियों में प्रतिनिधि को बाहर बुलाने के लिए यात्रा व्यय तथा दैनिक शुल्क प्राप्त होने पर व्यवस्था की जाएगी।
- ❋ केन्द्राध्यक्ष से सम्पर्क के लिए पूर्व समय निर्धारण आवश्यक है।
- ❋ सभी प्रकार के दैविक कृत्य, कर्मकाण्ड, विवाह, महारुद्र, चण्डी यज्ञ, विष्णु यज्ञ, भागवत सप्ताह, पुराण पारायण, वेद पारायण, श्राद्ध व पैशाची बाधा निवारण के लिए सम्पर्क करें। लक्ष्मी प्राप्ति के लिए श्रीयंत्र अष्ट धातु का लक्ष चण्डी में सिद्ध किया हुआ प्राप्त कर सकते हैं।
- ❋ समाज के कमजोर एवं निर्धन वर्ग के व्यक्ति प्रातः १० से १२ तक जन्म पत्रिका के साथ निःशुल्क सम्पर्क कर सकते हैं।
- ❋ रत्न धारण के लिए भी निर्णय किया जायेगा।

नोट :- हमारे यहां पारद लिंग, शुद्ध १ मुखी से १४ मुखी तक रुद्राक्ष, दक्षिणावर्त शंख एकाक्षी नारियल, श्वैतार्क गणपति, हथाजोड़ा, और भी कई तान्त्रिक वस्तुएँ मिलेगी। दक्षिणा सामर्थ्यानुसार होगी।

अध्यक्ष

बी एम. दाधीच (तान्त्रिक)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानी भद्राण्यभिहन्तु चापदः ।।

"विश्व शांति तथा धर्म प्रचार के लिए"

"श्री वेद अष्टादश पुराण पारायण सहित"

श्री पाठात्मक कोटि चण्डी महायज्ञ

आस्तिक भक्त समुदाय,

भगवती पराम्बा के अनुग्रह से दुर्गा के आराधक परम शाक्त श्री ब्रह्मर्षि उपेन्द्र शुक्ल महाराज ने श्री कोटिचण्डी का पुनीत संकल्प किया है ।

आज तक लक्ष पाठात्मक हवनात्मक यज्ञों का तो उल्लेख प्रायः सुना जाता है । परन्तु कोटि पाठात्मक यज्ञ का आयोजन न केवल अश्रुत पूर्व अपितु अद्वितीय ही है ।

'कलियुग' में प्रत्यक्ष फल देने में भगवती पराम्बा की समता कोई अन्य देवता नहीं करता इसलिए कहा गया है "कलौ चण्डी विनायकौ" अपना यह लोक और परलोक संवारने के इच्छुक भावुक भक्तों और भक्तिमति माताओं को अपने पारिवारिक तथा आध्यात्मिक कल्याण के लिए इस पुनीत कार्य में तन, मन, धन से सहयोग देकर भाग्यनगर के गौरव को बढ़ाकर अपनी आस्था के आयाम को समुन्नत बनाकर देव ब्राह्मण आशीर्वाद का भागी बनकर अपना कल्याण करना चाहिए ।

श्री पाठात्मक कोटि चण्डी महायज्ञ में आप निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं ।

अन्न, वस्त्र, हवन सामग्री, शुद्ध घी, आर्थिक सहयोग ।

१५१) रुपये देकर नवचण्डी (नवार्ण सम्पुटित नौ पाठ) १० में यजमान बन सकते हैं । ब्राह्मणों द्वारा १ दिन में ९ पाठ ।

१०५१) रुपये देकर शतचण्डी (नवार्ण सम्पुटित सौ पाठ) १० ब्राह्मणों द्वारा सौ पाठ ।

५०१) नित्य प्रसाद तथा पूजा व भोजन आरती का खर्च भेज सकते है । सदस्य चण्डी, लक्ष चण्डी सदस्य के लिए सम्पर्क स्थापित करें ।

ब्रह्मर्षि बी. एम. दाधीच
अध्यक्ष
श्री पाठात्मक कोटि चण्डी महायज्ञ
२२-६-७३९, पंजेशाह, देगची गली,
हैदराबाद-५०००२ (आं. प्र.)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Phones : 221947
47207
42806

HARKISHANDAS HARLOCHANDAS & CO.

JEWELLERS

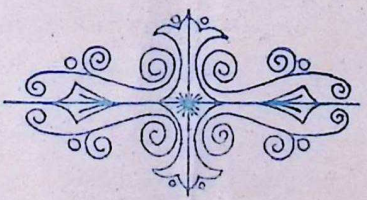

Vithaldas & Kishandas

Appointed Jewellary Valuer Govt. of India

4-1-957, ABID ROAD, HYDERABAD-500 001

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Regd. N. H. S. E. 264

With Best Compliments from

Purandas Ranchhoddas & Sons

Gulzar Houz, HYDERABAD-500 002

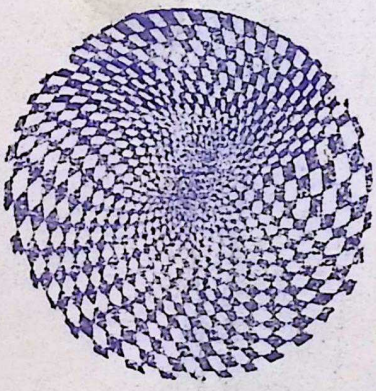

Manufacturers of :

KASHMIRI QUIWAM

Best Chewing Tobacco Blended with
Pure Saffron, Musk & Amber etc.

मुद्रक : श्री मधु प्रिन्टर्स, बेगमबाजार, हैदराबाद-५०००१२ दूरध्वनि : ५६९५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu